

(A No. 145) हरियाणा में कृषि की वर्तमान स्थिति और भविष्य की नीति दिशा

मनीष भारद्वाज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

सारांश

हरियाणा कृषि उत्पादन में देश के अग्रणी राज्यों में से एक है, लेकिन आज इसे कई चुनौतियों — भूजल दोहन, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट, मोनो-क्रॉपिंग, किसानों की आय में ठहराव और जलवायु परिवर्तन — का सामना करना पड़ रहा है। यह लेख हरियाणा की कृषि संरचना, प्रमुख फसलों, सरकारी योजनाओं, तकनीकी प्रगति और भविष्य की नीति दिशा को संबोधित करता है। लेख का उद्देश्य यह बताना है कि हरियाणा को अब पारंपरिक खेती से टिकाऊ, वैज्ञानिक और बाजारोन्मुख कृषि की ओर बढ़ना होगा।

1. प्रस्तावना

हरियाणा की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। राज्य कुल क्षेत्रफल का लगभग 80% हिस्सा खेती योग्य है और यहाँ की 60% आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। हरित क्रांति में हरियाणा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन अब समय बदल गया है — और कृषि का मॉडल भी बदलना होगा।

2. हरियाणा की कृषि संरचना

पैरामीटर	स्थिति
औसत खेत का आकार	लगभग 2 एकड़
सिंचित क्षेत्र	85% से अधिक
मुख्य फसलें	गेहूं, धान, सरसों
बागवानी	सब्जी, फल, फूल
पशुपालन	दूध उत्पादन में अग्रणी
मृदा स्थिति	ऑर्गेनिक कार्बन घटा हुआ

3. प्रमुख समस्याएँ

3.1 भूजल गिरावट

- धान की खेती ने पानी की भारी खपत की
- 75% ब्लॉक ओवर-एक्सप्लॉइटेड घोषित
- जल संकट भविष्य में गंभीर हो सकता है

3.2 मिट्टी की गिरती गुणवत्ता

- लगातार रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग
- ऑर्गेनिक कार्बन घटकर 0.4% से भी कम
- मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड की आवश्यकता बढ़ी

3.3 मोनो-क्रॉपिंग का दबाव विज्ञान की मासिक पत्रिका

हरियाणा में “गेहूं-धान” चक्र बहुत समय से चल रहा है, जिससे पोषक संतुलन बिगड़ा है।

3.4 कृषि आय में स्थिरता

किसानों का लाभ लागत की तुलना में अधिक नहीं बढ़ रहा, जिससे किसान आत्मनिर्भर नहीं हो पा रहे।

4. सरकारी योजनाएँ और पहलें

योजना	उद्देश्य
मेरी फसल मेरा ब्योरा	किसान डेटा बैंक
मृदा स्वास्थ्य कार्ड	पोषक तत्व संतुलन
राष्ट्रीय कृषि विकास योजना	विविधीकरण
फसल विविधीकरण नीति	धान से बाहर आना
हर खेत को पानी	सिंचाई सुधार
किसान क्रेडिट कार्ड	ऋण सुविधा
हरियाणा कृषि पॉलिसी 2023 (प्रस्तावित)	टिकाऊ कृषि की दिशा

5. फसल विविधीकरण की आवश्यकता

धान और गेहूं से हटकर हरियाणा को अब बाजरा, दालें, सूरजमुखी, मक्का, सब्जियां और बागवानी फसलों की ओर बढ़ना होगा। यह न केवल पानी बचाएगा बल्कि मूल्य वर्धित फसल से आय भी बढ़ेगी।

6. तकनीकी प्रगति

ड्रोन आधारित स्प्रेडिंग

किसान को समय और लागत बचत संभव।

प्रिसीजन फार्मिंग

GPS, सेंसर और डेटा आधारित खेती।

फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइजेशन (FPOs)

सामूहिक बाजार शक्ति और प्रोसेसिंग यूनिट स्थापना।

कृषि स्टार्टअप्स

हरियाणा में एग्री-टेक कंपनियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

7. महिला सहभागिता एवं युवाओं की भूमिका

महिला SHGs ग्रामीण आजीविका का नया मॉडल बन रही हैं। युवाओं के लिए एग्रीप्रेन्योरशिप, मशरूम यूनिट, प्रोसेसिंग यूनिट और फूड स्टार्टअप्स बड़े अवसर हैं।

8. भविष्य के लिए नीति सुझाव

1. धान के स्थान पर पानी बचाने वाली फसलें
2. जल बजटिंग और माइक्रो-इरिगेशन सिस्टम
3. फसल बीमा और MSP कवरेज बढ़ाना
4. कृषि-उद्योग (एग्री-बेस्ड MSMEs) ग्रामीण क्षेत्रों में
5. जिला-स्तर पर कृषि क्लाइमेट प्लान
6. यूनिवर्सिटी-स्टार्टअप-किसान मॉडल
7. प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन
8. FPO केंद्रित बाजार सुधार
9. पशुपालन व डेयरी सेक्टर को MSME रूप देना
10. युवाओं के लिए डिजिटल एग्री ट्रेनिंग

9. निष्कर्ष

हरियाणा कृषि का भविष्य केवल उत्पादन बढ़ाने में नहीं, बल्कि टिकाऊ, विज्ञान आधारित और बाजार उन्मुख खेती में है। राज्य को कृषि लाभ को बढ़ाने के लिए जल संरक्षण, तकनीकी उपयोग, किसानों का कौशल विकास और नीतिगत सुधारों की आवश्यकता है। यदि नीति दिशा सही रही तो हरियाणा कृषि फिर से राष्ट्रीय मॉडल बन सकता है — लेकिन इस बार पर्यावरण और किसान दोनों के संतुलन के साथ।

कृषि विज्ञान की मासिक पत्रिका